Tulsī Prajñā

A Peer Reviewed Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

YEAR-43 VOL.-171-172 JULY-DECEMBER, 2016

Editorial Office

Tulsī Prajñā, Jain Vishva Bharati Institute
LADNUN-341 306, Rajasthan, India
E-mail- tulsiprajnarj@gmail.com

Publisher

Jain Vishva Bharati Institute
Ladnun-341 306, Rajasthan, India

Printed at

Tilok Printing Press, Bikaner

Subscription

Three Year Rs 500/-, Life Membership Rs. 2100/-

The views expressed and facts stated in this journal are those of the writers. The Editor may not agree with them.

तुलसी प्रज्ञा

ISSN 0974-8857

TULSĪ PRAJÑĀ

A Peer Reviewed Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

YEAR-43 VOL.-171-172 JULY-DECEMBER, 2016

अनुक्रमणिका / CONTENTS

ENGLISH SECTION

Subject	Author	Page No.
Ācārāṅga-Bhāṣyam	Ācārya Mahāprajña	05-09
The Relevance of the Teachings of Lord Mahāvīra in the Modern Age	Dr Dulichand Jain	10-19
The Concept of Space and Direction in Jain Philosophy	Samani Dr Shashi Prajñā Vikas Jaina	20-35
Studies in Jaina Psychological Thought: A Review	Dr Anupam Jash	36-44
Effect of Preksha Meditation on Creative Problem Solving Ability	Samani Sulabh Pragya	45-50

हिन्दी खण्ड

विषय	लेखक	पृ. संख्या
स्थानांग सूत्र एवं अंगुत्तर निकाय में वैचारिक समानता के सूत्र	डॉ. [illegible]	51-57
उपासकदशांग सूत्र और पंचसमवाय	डॉ [illegible] जैन	58-66
भारत में महिला शिक्षा की ओर बढ़ते कदम	डॉ. [illegible]	67-77
वेदान्त दर्शन में प्रत्यक्ष की अवधारणा	[illegible]	78-82
वर्तमान युग की समस्याओं का समाधान : अनेकान्त	[illegible]	83-86
भारतीय साधना पद्धति में सिद्धियाँ : साधना में साधक अथवा बाधक	मनोज कुमार [illegible]	87-96

Scanned by CamScanner

तो फिर तुम गोशालक के सिद्धान्त का, जिसमें पुरुषार्थ का स्वीकार नहीं है, सुन्दर कैसे कह सकते हो? और भगवान महावीर के सिद्धान्त को, जिसमें पुरुषार्थ व प्रयत्न स्वीकार है, असुन्दर कैसे वतला सकते हो? इसलिए तुम्हारा कथन मिथ्या है।

इस तरह पंच कारण समवाय में से नियति और पुरुषार्थ की चर्चा उपासकदशांग सूत्र में उपलब्ध है। जिसे यहाँ प्रस्तुत किया गया है। इस सूत्र में वर्णित उपासकों के जीवन को पंचसमवाय की दृष्टि से रेखांकित किया जाए तो कह सकते हैं कि उचित काल में भगवान महावीर के उपदेश-श्रवण करने की उपलब्धि से धर्म-रुचि के स्वभाव वाले उपासकों ने पूर्वकृत कर्मों से प्राप्त मानवजन्म को तप-संयम रूपी पुरुषार्थ में नियोजित कर चित्तशुद्धि (कर्म-निर्जरा) से नियत देवगति को प्राप्त किया।

सन्दर्भ सूची -

1. उपासकदशांग सूत्र, सातवां अध्ययन, सूत्र 200, पृष्ठ 152, श्री आगम प्रकाशन समिति, वृज-मधुकर स्मृति भवन, पीपलिया बाजार, ब्यावर (राजस्थान), सन् 1989
2. उपासकदशांग सूत्र, छठा अध्ययन, सूत्र 171, पृष्ठ 134, श्री आगम प्रकाशन समिति, वृज-मधुकर स्मृति भवन, पीपलिया बाजार, ब्यावर (राजस्थान), सन् 1989
3. सन्मति प्रकरण, 3.52, आचार्य सिद्धसेन, व्याख्या- सुखलाल संघवी, ज्ञानोदय ट्रस्ट, अहमदाबाद, 1969
4. जैन दर्शन में कारण-कार्य व्यवस्था : एक समन्वयात्मक दृष्टिकोण, पृष्ठ 590, श्वेता जैन, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी, सन् 2008
5. व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र, शतक 12, उद्देशक 5, सूत्र 11, श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर
6. सूत्रकृतांगसूत्र, वीर्य अध्ययन, श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर
7. उपासकदशांग सूत्र, अध्ययन 7, सूत्र 199
8. उपासकदशांग सूत्र, अध्ययन 7, सूत्र 200
9. उपासकदशांग सूत्र, अध्ययन 6, सूत्र 168

पोस्ट डॉक्टरल फेलो, संस्कृत विभाग,
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राजस्थान)

भारत में महिला शिक्षा की ओर बढ़ते कदम

डॉ. विकास शर्मा

भूमिका

शिक्षा निरन्तर चलने वाली एक गतिशील प्रक्रिया है। महान् दार्शनिक एवं चिंतक प्लेटो के अनुसार, शिक्षा नये समाज की रचना का, समाज के नव निर्माण का सर्वश्रेष्ठ साधन है।[1] शिक्षा जीवन का समूचा दृष्टिकोण बदलकर बुराई की जड़ पर प्रहार करने और जीवन-यापन के गलत तौर-तरीकों में सुधार करने की चेष्टा है। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज के सदस्य सामाजिक चेतना से भर उठ सकते हैं।[2] शिक्षा की विकास में निर्णायक भूमिका है, ऐसा इसलिए नहीं है कि संचार तथा तकनीक के विकास के लिए शोध और आविष्कार का बहुत महत्त्व है बल्कि इसलिए है कि लोगों के मध्य जागरूकता पैदा करने तथा प्रगति, विकास और आधुनिकता के मूल्यों में आस्था उत्पन्न करने में शिक्षा की अहम् भूमिका है।[3]

शिक्षा मानव-जीवन के विकास का आधार स्तम्भ होती है। शिक्षा के अभाव में मानव जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। यह मनुष्य को उत्कृष्टता एवं उच्चता के शिखर पर स्थापित करती है। भारतीय शिक्षा का बीजारोपण सुदूर अतीत में आज से लगभग 6000 वर्ष पूर्व हो चुका था। प्राचीन भारत के मनीषी इस तथ्य से भलीभांति अवगत थे कि शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, समाज की चतुर्मुखी उन्नति और सभ्यता की बहुमुखी प्रगति की आधारशिला है अतः उन्होंने अध्यापन की ऐसी प्रशंसनीय प्रणाली का प्रतिपादन किया, जिससे विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास हो सके। उन्होंने ऐसी शिक्षण-पद्धतियों का आविष्कार किया, जिससे ज्ञान के विविध क्षेत्रों में मौलिक विचारों की भी अवगति हो सके। इसी कारण भारत का भाल आज भी गर्व और गौरव से उन्नत है। भारत की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए एफ. डब्ल्यू. टॉमस ने लिखा है-"भारत में शिक्षा विदेशी पौधा नहीं है। संसार

Scanned by CamScanner